Ques:- Critically examine Jung's theory of dream. Draw a comparison between Freud's and Jung's theory of dream.

Ans:- हम स्वप्न क्यों देखते हैं? — यह प्रश्न प्रारम्भ से ही विवादास्पद रहा है। प्राचीन काल में विद्वानों का मत था कि मनुष्य की आत्मा ही सपनों के लिए उत्तरदायी है। सुषुप्तावस्था में आत्मा बाहर निकल कर घूमती है और उसे जो अनुभव प्राप्त होते हैं वही स्वप्नोंमें प्रकट होते हैं। Hippocrates का विचार था कि मनुष्य की आत्मा कई छोटे-छोटे अंशों से मिलकर बनती है और इसके भिन्न-भिन्न अंग शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों का संचालन और नियंत्रण करते हैं। उनके अनुसार मनुष्य की आत्मा में ऐसी शक्ति है जो शरीर को छोड़कर बाहर निकल सकती है और रात में यह आत्मा विकृत कार्य करती है और इन्हीं कार्यों से प्राप्त अनुभव स्वप्न में प्रकट होते हैं। कुछ विद्वानों का मत था कि सपने दैवी शक्ति के कारण होते हैं और सपने का प्रिय तथा अप्रिय होना दैविक अनुभव पर निर्भर करता है।

लेकिन आधुनिक युग में यह विचारधारा असंतोषजनक और अवैज्ञानिक मानी गयी। आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने बताया है कि स्वप्न व्यक्ति की सोई हुयी अवस्था में होने वाली एक मानसिक क्रिया है। सर्वप्रथम 1900 ई० में Freud ने अपनी पुस्तक "The Interpretation of Dreams" के माध्यम से स्वप्न की मनोवैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की। उनके अनुसार स्वप्न के द्वारा हमारी दमित इच्छाओं (repressed desires) की पूर्ति होती है। इसीलिए फ्रायड के स्वप्न सिद्धान्त को "इच्छापूर्ति सिद्धान्त" कहा जाता है।

Freud के "wish-fulfilment theory of dream" से असंतुष्ट होकर Jung ने एक अलग स्वप्न सिद्धान्त का प्रतिपादन किया, जिसे "आत्म प्रतीकात्मक सिद्धान्त" (Auto symbolic theory) कहा जाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति की मौलिक इच्छा 'जीने की इच्छा' (will to live) है और इसी इच्छा की पूर्ति के लिए वह क्रियाशील रहता है। जब इच्छा शक्ति को उचित रूप से अपनी अभिव्यक्ति का अवसर नहीं

मिलता तब वह शक्ति पीछे की ओर मुड़ जाती है, जिसे प्रतिगमन (regression) कहते हैं। लेकिन जब विभिन्न तरह से विकासी अभिव्यक्ति होती है तब वह उन्नति-दिशा (Progressive trend) की ओर मुड़ती है। चूँकि मनुष्य में कुछ-न-कुछ अंशों में उन्नति और पतन होते ही रहते हैं, इसलिए इस शक्ति की दोनों दिशाओं में संघर्ष (conflict) का रहना भी स्वाभाविक है। स्वप्न में इन्हीं वर्तमान कठिनाईयों को सुलझाने का काम होता है।

Jung के स्वप्न सिद्धान्त में निम्नलिखित बातें महत्वपूर्ण हैं:—

① यह सिद्धान्त भी अचेतन मन (unconscious) को महत्वपूर्ण मानता है, लेकिन इसके अनुसार स्वप्न में दो प्रकार के अचेतन मन कार्य करते हैं:— व्यक्तिगत अचेतन (Personal unconscious) तथा जातीय अचेतन (Racial unconscious)

युंग ने जातीय अचेतन को ही अधिक महत्वपूर्ण माना है। उनके अनुसार वैयक्तिक अचेतन के अन्तर्गत आने वाले सभी विचार अर्जित (acquired) होते हैं। यह विचार समाज द्वारा अमान्य होते हैं और इन्हें चेतन मन में लाने से व्यक्ति में दोष-भाव (sense of guilt) का जन्म हो जाता है। यह दोष-भाव व्यक्ति में असंतुलन ला देता है, जिससे वह इससे छुटकारा पाना चाहता है। यह विचार दमित होकर चेतन से अचेतन मन में चले जाते हैं। अतः वैयक्तिक अचेतन में पड़े विचार विस्मृत, दमित एवं तिरस्कृत होते हैं।

युंग के अनुसार अर्जित गुण एवं तरीके वंशानुक्रम द्वारा प्राप्त किये जाते हैं और इसे युंग ने जातिय या सामूहिक अचेतन कहा। प्रत्येक व्यक्ति में छिपी हुई निहित स्मृतियाँ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक मस्तिष्क की संरचना के माध्यम से हस्तान्तरित होती रहती हैं। इस सामूहिक अचेतन में मानव जाति के हजारों साल के अनुभवों के संस्कार (Archetype) निहित रहते हैं। यही संस्कार जाति की स्मृतियों का प्रतिनिधित्व करता है। यह संस्कार अचेतन मन में निवास करते हैं और वहीं से प्रतीक (symbol) के माध्यम से व्यक्त तथा अभिव्यक्त होते हैं। स्वप्न में बहुत सारे प्रतीक

ऐसे होते हैं जो लगभग सभी व्यक्तियों के स्वप्न में दिखाई देते हैं और जिनका एक ही अर्थ होता है। युंग के अनुसार सामूहिक अचेतन के कारण ही स्वप्न के प्रतीकों में यह समानता मिलती है। वास्तव में युंग यह कहना चाहते हैं कि अचेतन तत्वों में सभी प्रकार की दमित नैतिक इच्छाएँ और आदिम विचार निहित रहते हैं जो व्यक्ति को विभिन्न प्रकार की क्रियाएँ करने को प्रेरित करते हैं।

(2) युंग ने अपने सिद्धान्त में प्रतीक (symbol) को भी महत्व दिया है लेकिन उसके अनुसार प्रतीक का स्वरूप व्यक्तिगत होता है। अर्थात अलग-अलग लोगों के लिए प्रतीक का अर्थ अलग-अलग होता है। जैसे, माँ का प्रतीक जन्मभूमी तथा आश्रय दोनों ही होती है। इसी प्रकार पिता का प्रतीक ताकत, शक्ति तथा अधिकारी है।

(3) युंग के स्वप्न सिद्धान्त के अनुसार स्वप्न का सम्बन्ध वर्तमान तथा भविष्य में होने वाली घटनाओं से भी होता है जो एक चेतावनी के रूप में आता है। दैनिक जीवन में बहुत से स्वप्न हम ऐसे देखते हैं जिनसे भविष्य में घटित होने वाली घटना का आभास मिलता है। युंग ने अपनी पुस्तक "The modern man in search of soul" में इसका एक सुन्दर उदाहरण दिया है जिसमें उसके एक मित्र ने स्वप्न में देखा कि वह एक ऊँचे पहाड़ पर चढ़ा जा रहा है। पहाड़ की उच्चतम चोटी पर पहुँचने पर उसे आकाश में चढ़ जाने का मन करता है और उसे ऐसा अनुभव भी होता है कि वह आकाश में पहुँच रहा है। युंग ने अपने मित्र का स्वप्न सुनकर उसे भविष्य में कभी पहाड़ पर न चढ़ने की हिदायत दी। लेकिन उसके मित्र ने अनुरोध को न मानते हुए एक दिन फिर जब पहाड़ पर चढ़ाई की तो एक चट्टान के खिसक जाने से उसे चोट आई। युंग इसे पहली चेतावनी मानते हैं। एक माह के बाद युंग के मित्र ने फिर पहाड़ पर चढ़ाई की और ऊँची चट्टान से गिरकर उसकी मृत्यु हो गई। अतः इस स्वप्न से बिल्कुल स्पष्ट है कि स्वप्न हमें भावी जीवन में घटित होने वाली घटनाओं से सावधान करता है।

(4) इस सिद्धान्त के अनुसार स्वप्न के लिए दमन (repression)

आवश्यक नहीं है। स्वप्न एक साधारण मानसिक क्रिया है जिसमें व्यक्ति के सामूहिक या जातीय अचेतन में संचित जातीय विशेषताओं के संस्कार अभिव्यक्त होते रहते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि युंग का स्वप्न सिद्धान्त भी निःसंदेह स्वप्न की व्यापक मनोवैज्ञानिक व्याख्या करता है। लेकिन आलोचकों ने इस सिद्धान्त पर रहस्यात्मकता, धार्मिकता और वैज्ञानिक अस्पष्टता के दोष लगाया है। उनके अनुसार युंग का स्वप्न सम्बन्धी विचार तथ्यों पर आधारित नहीं है और उसमें असंगति पाई जाती है। लेकिन यदि रहस्यवादी और धार्मिक दृष्टिकोण तथ्यात्मक नहीं है तो Freud का प्रकृतिवादी दृष्टिकोण भी तो अन्ततोगत्वा आस्था पर ही आधारित है।

युंग, जिसका सम्बन्ध फ्रायड के साथ काफी गहरा रहा और दोनों ने मिलकर मनोविज्ञान के विकास में काफी योगदान दिया, ने कुछ बिन्दुओं पर मतभेद के कारण 1913 में अपना सम्बन्ध फ्रायड से तोड़ लिया। स्वप्न की व्याख्या में भी दोनों विद्वानों के विचार स्पष्ट भिन्न हैं। कुछ प्रमुख भिन्नता निम्नलिखित बिन्दुओं पर है :—

(i) फ्रायड और युंग दोनों स्वप्न पर अचेतन प्रभाव को स्वीकार करते हैं, लेकिन दोनों के विचार भिन्न हैं। फ्रायड ने व्यक्तिगत अचेतन को महत्वपूर्ण माना है तो युंग ने सामूहिक तथा जातीय अचेतन को।

(ii) फ्रायड ने स्वप्न के लिए दमित काम इच्छाओं को अनिवार्य माना है। उनका विचार है कि काम-प्रवृत्ति के दमन के बिना स्वप्न नहीं हो सकते। परन्तु युंग ने स्वप्न के लिए दमन को अनावश्यक माना है। उनका कहना है कि अन्य मानसिक क्रियाओं की तरह स्वप्न भी एक मानसिक क्रिया है। व्यक्ति के सामूहिक अचेतन में उपस्थित जातीय विशेषता के संस्कार अपनी सहजगति के साथ सपनों में अभिव्यक्त होते रहते हैं। युंग स्वप्न में दमन के महत्व को तो नहीं मानते, लेकिन वह यह अस्वीकार भी नहीं करते कि दमन के कारण भी स्वप्न हो सकता है।

फ्रायड ने लैंगिक इच्छाओं (sexual desires) को सपनों का कारण

Scanned with CamScanner

माना है, जबकि युंग ने सपनों में "सामान्य जीवन शक्ति" के प्रकटीकरण माना है।

(iv) फ्रायड के अनुसार स्वप्न का सम्बन्ध शैशवकाल के दमित इच्छा सम्बन्धी अनुभवों (Infantile sex experiences) से रहता है, परन्तु युंग के अनुसार स्वप्न से वर्तमान समस्याओं का समाधान होता है।

(v) स्वप्न विश्लेषण के आधार पर भी दोनों सिद्धान्तों में अन्तर देखा जा सकता है। एक व्यक्ति ने जिसे शिक्षा समाप्ति के बाद कोई नौकरी नहीं मिली, स्वप्न देखा कि — "मैं अपनी माँ और बहन के साथ सीढ़ियों पर चढ़ रहा था। जैसे ही हमलोग ऊपर पहुँचे तो मुझे कहा गया कि बहन को बच्चा होने वाला है।" फ्रायड के अनुसार सीढ़ी पर चढ़ना एक यौन प्रतीक है तथा माँ और बहन शैशवकाल की कामवृति के प्रतीक हैं। लेकिन इस विश्लेषण से युंग संतुष्ट नहीं हुआ। उसने स्वतंत्र साहचर्य विधि के आधार पर यह निष्कर्ष दिया कि "माँ" उस व्यक्ति के अन्दर उत्तरदायित्व की भावना का प्रतीक है और "बहन" को युंग ने किसी स्त्री के प्रति सच्चे प्रेम का प्रतीक माना है। बहन के होने वाले बच्चे को उस व्यक्ति के लिए अपने जीवन में एक नया रूप ग्रहण करने का प्रतीक माना है।

(vi) युंग, फ्रायड के "सार्वजनिक यौन-प्रतीक" (universal sex symbol) को नहीं मानता है। इसीलिए वह सपनों में काम प्रवृति के अतिरिक्त नैतिक और धार्मिक प्रवृतियों को भी विशेष महत्व देता है।

(vii) युंग के अनुसार स्वप्न आदेशात्मक होता है। कभी तो यह हमारी मानसिक स्थितियों और आवश्यकताओं को व्यक्त करता है और कभी भविष्य में होने वाली घटनाओं का संकेत देता है। लेकिन फ्रायड इस विचार से सहमत नहीं हैं।